सिक्के

ऐतिहासिक जानकारी में सिक्कों का भी महत्वपूर्ण स्थान है। मुद्रा या सिक्कों के अध्ययन से हमें समकालीन शासकों या राजाओं के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। 206 ई० पूर्व से लेकर 300 ई० पूर्व तक के भारतीय इतिहास का ज्ञान हमें मुख्य रूप से मुद्राओं से ही मिलती है।

कुछ प्राप्त मुद्राओं में तिथियाँ भी खुदी हुई होती हैं जिससे काल निर्धारण की भी जानकारी मिलती है।

(क) पुराने जमाने में सिक्के अनेकों प्रकार के धातुओं से बनाये जाते थे जैसे – सोना, चाँदी, काँसा, पीतल शीशा तथा लोहे इत्यादि।

(ख) प्राचीनतम सिक्कों को आहत सिक्के भी कहा जाता था

(ग) ठप्पा मारकर बनाए जाने वाले सिक्कों का भारतीय भाषा में आहत मुद्रा कहा जाता था। आहत या पंचमार्क सिक्के पाँचवीं सदी ई० पूर्व के हैं।

(घ) इन आहत सिक्कों पर पेड़, मछली, साँड़, हाथी, अर्द्धचंद्र आदि के चिन्ह बने होते थे।

(ङ) सर्वाधिक सिक्के मौर्योत्तर काल में बने हैं जो मुख्यतः सोना, चाँदी, सीसे और ताम्बा के हैं।

(च) पकाई गई मिट्टी के सिक्कों के अधिकांश साँचे कुषाण काल के है जो गुप्त काल के बाद के लुप्तप्राय हो गए।

(छ) सर्वप्रथम सिक्कों पर लेख लिखने के कार्य यवन शासकों ने किया।

(ज) सर्वप्रथम भारत में शासन करने वाली यूनानी शासकों के सिक्कों पर लेख और तिथियाँ उत्कीर्ण है।

(झ) कुषाणों के समय में सर्वाधिक शुद्ध सोने के सिक्के प्रचलन में थे, पर सर्वाधिक सोने के सिक्के गुप्त काल में जारी किये गये थे।

(ञ) समुद्रगुप्त के कुछ सिक्कों पर यूप कुछ पर अश्वमेध यज्ञ तथा कुछ पर वीणा बजाते हुए दिखाया गया है।

(ट) समुद्रगुप्त के वीणा बजाते हुए चित्र वाले सिक्के से उसके संगीतप्रेमी होने का प्रमाण मिलता है।